

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, पवित्र आत्मा और मसीह के साथ एकता, सत्र 11, मसीह के साथ एकता के लिए आधार, यूहन्ना 17

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन की पवित्र आत्मा और मसीह के साथ एकता पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 11 है, मसीह के साथ एकता के लिए आधार, यूहन्ना 17।

हम मसीह के साथ एकता में अपना अध्ययन जारी रखते हैं, विशेष रूप से अब यूहन्ना के सुसमाचार में मसीह के साथ एकता, और हम यूहन्ना 17 तक पहुँच चुके हैं, जो पिता और पुत्र, और पुत्र और विश्वासियों के आपसी निवास की बात करता है।

बेटा खुद को यूहन्ना 17 की महान पुरोहिती प्रार्थना में देखता है; वह खुद को अपना मिशन पूरा करके पिता के पास लौटता हुआ देखता है। यही उसका मन है। यही उसका दृष्टिकोण है। मेरे अनुमान में, पारंपरिक विभाजन सही है।

यीशु अपने लिए प्रार्थना करते हैं, पद 1-5, उनके शिष्य पद 6-19, और संसार पद 20-26। यीशु पद 21 में प्रार्थना करते हैं, यूहन्ना 17:21, पद 20, मैं केवल इनके लिए ही नहीं, बल्कि उनके लिए भी प्रार्थना करता हूँ जो इनके वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, कि वे सब एक हों, जैसे कि हे पिता, तू मुझ में है, और मैं तुझ में हूँ, वैसे ही वे भी हम में हों, ताकि संसार विश्वास करे कि तूने मुझे भेजा है। पिता और पुत्र का परस्पर निवास उन लोगों की एकता का आधार है जो प्रेरितों की गवाही के माध्यम से यीशु पर विश्वास करेंगे।

यीशु प्रार्थना करते हैं कि वे सब एक हों, जैसे कि हे पिता, तू मुझ में है और मैं तुझ में हूँ, वैसे ही वे हम में हों, ताकि संसार विश्वास करे कि तूने मुझे भेजा है - पिता और पुत्र का, और पुत्र और विश्वासियों का परस्पर निवास। विश्वासी पिता और पुत्र में हैं।

मेरा शीर्षक गलत है, मैं क्षमा चाहता हूँ। पिता और पुत्र, तथा पिता और पुत्र, और विश्वासियों का परस्पर वास होना चाहिए। विश्वासी पिता और पुत्र में हैं।

केवल यहाँ, यूहन्ना विश्वासियों के पिता और पुत्र में होने की बात करता है। हर बार, विश्वासियों को पुत्र में होने के लिए कहा जाता है। जैसा कि पहले यूहन्ना 14:23 में उल्लेख किया गया है, पिता और पुत्र को विश्वासियों में रहने के लिए कहा जाता है 14:23। इस प्रकार यूहन्ना अपनी शिक्षाओं को व्यवस्थित करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

वास्तव में, यद्यपि यूहन्ना कभी भी व्यवस्थित रूप से नहीं कहता, हम निष्कर्ष निकालते हैं कि हम पवित्र त्रित्व में हैं। ईश्वरत्व की एकता को देखते हुए यह एक अपरिहार्य निष्कर्ष है। हम ईश्वरीय व्यक्तियों में अंतर करते हैं, लेकिन उन्हें कभी अलग नहीं करते।

यहां तक कि मत्ती 27:46 में क्रूस से यीशु की पुकार, हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों त्याग दिया, द्वारा प्रमाणित अलगाव भी संबंधपरक है, न कि सत्तामूलक। इसने परमेश्वर के त्रित्ववादी अस्तित्व को बाधित नहीं किया। यहाँ, विश्वासी ईश्वरत्व के पारस्परिक निवास में फंस गए हैं।

हम सृष्टिकर्ता-सृष्टि के बीच के अंतर को बनाए रखते हैं और इस बात पर जोर देते हैं कि त्रित्व एक दूसरे में और हम में इस तरह से वास करता है जिस तरह से हम त्रित्व में वास नहीं करते। फिर भी, यह समझने की कोशिश करना रहस्यमय और अद्भुत है कि विश्वासी त्रित्व में हैं, एक प्राणीगत, अनुग्रह-कारण तरीके से, मसीह और आत्मा के कार्य के माध्यम से। योग्यता के लिए यह कैसा है? हम दिव्य प्रेम और जीवन में भाग लेते हैं जिसे त्रित्ववादी व्यक्तियों ने हमेशा एक प्राणीगत तरीके से साझा किया है।

भगवान शाश्वत, अनंत निर्माता हैं। हम न तो शाश्वत हैं और न ही अनंत। खैर, हम निर्माता नहीं हैं।

हम दोनों ही समान रूप से सृजनकर्ता नहीं हैं। या तो हम प्राणी हैं। ईश्वर अनंत, शाश्वत और सृजनकर्ता है।

हम सीमित और सीमित हैं। हम अमर हैं, हमें बनाया गया है, और फिर हम हमेशा के लिए बने रहेंगे, लेकिन हम शाश्वत नहीं हैं। और हम प्राणी हैं, और हम हमेशा रहेंगे।

और त्रित्ववादी व्यक्तियों का आपस में वास करना स्वभाव से ही है। यह वही है जो वे एक ईश्वर के रूप में हैं। त्रित्व में हमारा वास, ये शब्द बहुत ही अपमानजनक हैं, अनुग्रह से है।

स्वभाव से नहीं। केवल मसीह और उसके साथ एकता के माध्यम से ही हम परमेश्वर के प्रेम और जीवन में भाग ले सकते हैं। हालाँकि यूहन्ना यह नहीं सिखाता, लेकिन पौलुस स्पष्ट रूप से सिखाता है कि आत्मा ही मुख्य अभिनेता है जो हमें मसीह से जोड़ता है, यहाँ तक कि वह उद्धार के अनुप्रयोग में भी मुख्य अभिनेता है।

एक सृजित, अनुग्रह-कारण तरीके से, मसीह और पवित्र आत्मा के संचालन के माध्यम से, विश्वासी दिव्य प्रेम और दिव्य जीवन में भाग लेते हैं जिसे त्रित्ववादी व्यक्तियों ने हमेशा साझा किया है। ईश्वर हमें अपने साथ एकता में लाता है। मुझे ऐसा लगता है, इन व्याख्यानों के दौरान भी, कई, कई वर्षों तक इन चीजों को सिखाने के बाद, मैंने समझ में कुछ प्रगति की है।

ऐसा इसलिए है क्योंकि यह हमारे लिए कई मायनों में नया है, और कुछ मायनों में, हम इससे उन तरीकों से प्रभावित होते हैं, जो शायद उन चीजों से प्रभावित नहीं होते, जिन पर हम हमेशा से विश्वास करते आए हैं। अर्थात्, कि परमेश्वर अनन्त जीवन देता है, परमेश्वर हमें अनन्त जीवन देता

है, और हम परमेश्वर के साथ संगति करते हैं। लेकिन ये एक ही बात कहने के दो अलग-अलग तरीके हैं।

जब हम कहते हैं कि हमारे पास अनन्त जीवन है, तो हमारा मतलब है कि हम जो आध्यात्मिक रूप से मरे हुए हैं और परमेश्वर के जीवन से रहित हैं, इफिसियों 2:1 से 4, मसीह के साथ जीवित किए गए हैं, उसके साथ जी उठे हैं, और उसके साथ स्वर्गीय स्थानों में बैठाए गए हैं। हम परमेश्वर के अनन्त जीवन को साझा करते हैं। इसके अलावा, 1 यूहन्ना 1, आयत 3 के आसपास, हमारी संगति पिता और उसके पुत्र, यीशु मसीह के साथ है।

यह हमारे होठों से निकलता है, यह हमारे लिए एक तरह से सामान्य बात है, लेकिन ऐसा नहीं है। हम शाश्वत, अमर ईश्वर के साथ संगति करते हैं। तो वास्तव में, यह पेरिचोरेसिस व्यवसाय जितना अद्भुत है, उतना ही नया भी नहीं है।

यह उतना ही समझ से परे है जितना कि पाप में मरे हुए जीव, परमेश्वर के अनन्त जीवन में भाग लेते हैं और उसका आनंद लेते हैं, और यहाँ तक कि उन्हीं जीवों का त्रिएक परमेश्वर के साथ अभी और हमेशा संगति करना। पिता और पुत्र के सह-अनुयायी और विश्वासियों के साथ पुत्र के सह-अनुयायी। यीशु पद 22 और 23 में पिता से बात करना जारी रखते हैं।

पिता ने देहधारी पुत्र को जो दिव्य महिमा दी, वह विश्वासियों के एक होने का आधार है, ठीक वैसे ही जैसे पिता और पुत्र एक हैं। जो महिमा तूने मुझे दी है, यूहन्ना 17:22, वह मैंने उन्हें दी है, कि वे एक हों, जैसे हम एक हैं। यीशु पद 23 में आगे कहते हैं, मैं उनमें हूँ और तू मुझमें, हे पिता, कि वे सिद्ध रूप से एक हो जाएँ, ताकि संसार जाने कि तूने मुझे भेजा और जैसा तूने मुझ से प्रेम किया, वैसा ही उनसे प्रेम किया।

यीशु ने श्लोक 23 में कहा, वह पिता के पुत्र में निवास करने को अपने स्वयं के विश्वासियों के साथ जोड़ता है। मैं दोहराता हूँ, ईश्वरीय सह-अनुयायी, पेरिकोरेसिस और खतना अद्वितीय हैं और उन्हें केवल प्राणियों के साथ दोहराया नहीं जा सकता। फिर भी, यीशु ने ईसाई एकता के लिए जो मापदंड दिया है वह पिता और पुत्र के बीच है।

और उस एकता में पिता का पुत्र में वास करना और पुत्र का मसीहियों में वास करना शामिल है। एक बार फिर, यूहन्ना हमें एक मिशनरी दिशा की ओर संकेत करता है। यह सब सच है।

ईश्वर हम में है और हम ईश्वर में हैं, ताकि संसार जाने कि तूने मुझे भेजा है, यीशु कहते हैं, और कि तू संसार से प्रेम रखता है, जैसा तूने मुझसे प्रेम रखा है। इस संबंध में, मैं श्रद्धापूर्वक कहता हूँ: ईश्वर एक मिशनरी ईश्वर है, और उसका पुत्र निश्चित रूप से एक महान मिशनरी है, जिसका नाम बड़े अक्षर एम के साथ है। यीशु पद 26 में प्रेम के विषय पर लौटते हैं। वह अपने पहले के शब्दों का अभ्यास करते हैं।

25, हे धार्मिक पिता, भले ही संसार तुझे नहीं जानता, परन्तु मैं तुझे जानता हूँ, और ये भी जानते हैं कि तूने मुझे भेजा है। मैंने उन्हें तेरा नाम बताया, और बताता रहूँगा कि जो प्रेम तूने मुझसे किया है, वह उनमें हो, और मैं उनमें रहूँ। यीशु प्रेम के विषय पर लौटता है और पहले दिए गए शब्दों

को दोहराता है, पद 6 से 8, जो हमें बताते हैं कि उसने पिता को उन पर प्रकट किया जिन्हें पिता ने उसे दिया था।

पिता को उनके सामने प्रकट करते रहेंगे। उनका उद्देश्य यह है कि पिता का पुत्र के प्रति जो प्रेम था, वह शिष्यों में हो और मसीह उनमें हो। यह उचित है कि इस महान प्रार्थना के अंतिम तीन शब्द पुत्र के परमेश्वर के लोगों में निवास करने के बारे में बताते हैं, जो पिता द्वारा उसे दी गई सेवकाई की पूर्ति है, और मैं उनमें हूँ।

यह यूनानी पाठ के लिए भी वही बात है, और मैं खुद भी उनमें हूँ। यूहन्ना के सुसमाचार के लिए निष्कर्ष। यूहन्ना के सुसमाचार में मसीह के साथ एकता के बारे में बहुत कुछ कहा गया है।

यूहन्ना कभी भी मसीह के साथ मरने या उसके साथ दफनाए जाने और जी उठने के बारे में नहीं बोलता, जैसा कि पौलुस करता है, न ही वह मसीह में परमेश्वर द्वारा हमें आशीष दिए जाने के बारे में बोलता है, जैसा कि पौलुस करता है। इसके बजाय, यीशु मुख्य रूप से प्रथम व्यक्ति में बोलते हैं, जीवन की रोटी, अच्छे चरवाहे, दाखलता, शाखाओं के अपने प्रवचनों में, और पौलुस द्वारा अपने पत्रों में प्रकट किए गए पूरक सत्यों को सिखाने के लिए अपनी महायाजकीय प्रार्थना में। पिता और पुत्र एक दूसरे में निवास करते हैं।

पिता और पुत्र विश्वासियों में वास करेंगे। वास्तव में, आत्मा आने वाला है, और वह उनके साथ और उनके अंदर रहने वाला है। पिता और पुत्र और विश्वासी परस्पर एक दूसरे में वास करेंगे।

पिता और पुत्र एक दूसरे में निवास करते हैं। पिता और पुत्र विश्वासियों में निवास करेंगे, और आत्मा भी। पिता और पुत्र और विश्वासी परस्पर एक दूसरे में निवास करेंगे।

पिता और पुत्र एक दूसरे में निवास करते हैं। यूहन्ना घोषणा करता है कि पिता पुत्र में है और उसमें निवास करता है। पुत्र पिता में है, और पिता और पुत्र एक दूसरे में हैं।

संक्षेप में, पिता और पुत्र परस्पर एक दूसरे में निवास करते हैं। इसका अर्थ है कि परमेश्वर त्रि-एकता है। यदि मैं द्वि-एकता कहता हूँ, तो इसका अर्थ है कि यह उतना ही है जितना कि यूहन्ना ने अब तक कहा है, और प्रभु ने त्रित्ववादी शब्दों में इसे स्पष्ट करने के लिए पौलुस का उपयोग किया।

मैं इस बात से इनकार नहीं कर रहा हूँ कि ईश्वर हमेशा से ही एक में तीन रहे हैं। हालाँकि, उन्होंने हमेशा यह नहीं बताया है, और मुझे लगता है कि त्रिएकत्व का सिद्धांत अनुग्रह के सिद्धांत का एक उपसमूह है। हम सीखते हैं कि ईश्वरत्व में दो व्यक्ति हैं जब दूसरा व्यक्ति हम पापियों और हमारे उद्धार के लिए मनुष्य बन जाता है, अंततः मर जाता है और जी उठता है।

हम सीखते हैं कि परमेश्वर त्रि-एकता है जब पिता और पुत्र पित्तोकुस्त के दिन आत्मा को भेजते हैं। परमेश्वर हमेशा से ऐसा ही रहा है, लेकिन वह इसे पूरी तरह से तब तक प्रकट नहीं करता जब तक कि छुटकारे का इतिहास अवतार और फिर पित्तोकुस्त तक नहीं पहुँच जाता। पिता पुत्र में है।

अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान से पहले पिता को संबोधित करते हुए, यीशु विश्वासियों के लिए प्रार्थना करते हैं। वे कहते हैं, मैं उनमें हूँ और वे और तुम मुझ में हो। 17:23.

मैं, यीशु, विश्वासियों में हूँ, और आप, पिता, मुझमें, यीशु ने कहा। और पिता पुत्र में निवास करता है। पुत्र में होना पुत्र में निवास करने के बराबर है, जैसा कि निम्नलिखित समानता से पता चलता है।

यीशु फिलिप्पुस से कहते हैं, "क्या तू विश्वास नहीं करता कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में है? ये बातें मैं तुम से कहता हूँ, अपनी ओर से नहीं कहता, परन्तु पिता जो मुझ में रहता है, अपने काम करता है। पिता मुझ में है। पिता मुझ में रहता है।"

यूहन्ना 14.10. इसके अतिरिक्त, पुत्र पिता में है। यीशु शिष्यों को अपने बाहर निकलने और आत्मा के प्रवेश के लिए तैयार करता है। उस दिन, तुम जानोगे कि मैं पिता में हूँ ।

14.20. वास्तव में, पिता और पुत्र एक दूसरे में हैं। पिता मुझमें है। मैं पिता में हूँ ।

10.38. क्या तुम विश्वास नहीं करते कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में है? 14:10. मेरा विश्वास करो, मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में है। 14:11. जैसे कि हे पिता, तू मुझ में है और मैं तुझ में हूँ। 17:21. यह चार बार है।

हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि पिता और पुत्र एक दूसरे में हैं या दूसरे शब्दों में कहें तो एक दूसरे में निवास करते हैं। इस पेरिकोरेसिस, पारस्परिक दिव्य निवास के कारण, आश्चर्यजनक रूप से, यीशु को, जो कि पृथ्वी पर एक मनुष्य है, देखने का अर्थ है अदृश्य पिता को देखना। 14:9. ऊपर दिए गए किसी भी अंश में पारस्परिक निवास में पवित्र आत्मा को शामिल नहीं किया गया है।

यह जॉन के उस पैटर्न से मेल खाता है जिसमें आत्मा की सेवकाई को मुख्य रूप से पिन्तेकुस्त के बाद तक सीमित कर दिया गया है। इस प्रकार, यह स्वीकार करके कि जॉन ऐसा नहीं कहता है, हम उसकी शिक्षाओं को व्यवस्थित करते हैं और पवित्र आत्मा को शामिल करते हैं। तीनों त्रित्ववादी व्यक्ति एक दूसरे में हैं।

वे दिव्य जीवन साझा करते हैं। उनमें से प्रत्येक पवित्र ईश्वर है और अन्य दो दिव्य व्यक्तियों में है। मैं इसे फिर से नहीं बताऊंगा, कहीं ऐसा न हो कि मैं आपको नींद में डाल दूँ।

पिता और पुत्र विश्वासियों में वास करेंगे। यूहन्ना पुष्टि करता है कि पुत्र विश्वासियों में वास करेगा और पिता और पुत्र उनके साथ अपना घर बनाने आएंगे। संक्षेप में, पिता और पुत्र विश्वासियों में वास करेंगे।

बेटा विश्वासियों में होगा। यीशु ने वादा किया है कि जब वह सत्य की आत्मा भेजेगा, तो तुम जानोगे कि मैं अपने पिता में हूँ, तुम मुझ में हो, और मैं तुम में हूँ। 14:20. मसीह न केवल विश्वासियों में वास करेगा, बल्कि वह उन्हें अपनी उपस्थिति का एहसास भी कराएगा।

पिता से अपनी पुरोहितीय प्रार्थना में, यीशु दो बार कहते हैं कि वह विश्वासियों में होंगे। विश्वासियों में। यीशु शिष्यों को महिमा देते हैं ताकि वे भी एक हो जाएँ जैसे हम एक हैं।

मैं उनमें हूँ, और तू मुझ में है। 17:22-23. कुछ आयतों के बाद, वह कहता है कि उसने पिता को शिष्यों को ज्ञात कराया और ऐसा करना जारी रखेगा ताकि पुत्र के लिए पिता का प्रेम उनमें हो और मैं उनमें रहूँ - आयत 26.

इसके अलावा, पिता और पुत्र दोनों ही मसीहियों में वास करेंगे। यीशु इस महत्वपूर्ण सत्य को एक गर्मजोशी भरी छवि के साथ संप्रेषित करते हैं। जो कोई भी यीशु से प्रेम करता है और उसकी आज्ञा मानता है, उसे विशेष आशीर्वाद मिलेगा और पिता उससे विशेष रूप से प्रेम करेगा।

और पिता के बारे में बोलते हुए, यीशु ने घोषणा की कि हम उसके पास आएँगे और उसके साथ अपना घर बनाएंगे। 14:23. पिता और पुत्र विश्वासियों के साथ अपना निवास स्थान बनाएंगे। बेशक, फुलर का नया नियम रहस्योद्घाटन हमें इस दिव्य निवास में आत्मा को शामिल करना सिखाता है।

वास्तव में, पॉल मुख्य रूप से यह भूमिका आत्मा को सौंपता है। कार्सन इस आयत में सेंट ऑगस्टीन का हवाला देते हुए कहते हैं कि, विश्वासी में त्रिएक ईश्वर का वास है, उद्धारण समाप्त। मुझे यह देखकर खुशी हुई कि सेंट ऑगस्टीन ने वह व्यवस्थित किया है जो जॉन नहीं कहते।

पिता और पुत्र तथा विश्वासी एक दूसरे में निवास करेंगे। यूहन्ना सिखाता है कि विश्वासी पिता और पुत्र में होंगे। यीशु और विश्वासी एक दूसरे में होंगे, और यीशु और उसके शिष्य परस्पर एक दूसरे में रहेंगे।

फिर से, संक्षेप में कहें तो, पिता और पुत्र तथा विश्वासी परस्पर एक दूसरे में निवास करेंगे। विश्वासी पिता और पुत्र में होंगे। यीशु भविष्य के विश्वासियों की एकता के लिए प्रार्थना करते हैं और पिता और पुत्र की एकता को अपने माप के रूप में उपयोग करते हैं।

जैसे तू हे पिता, मुझ में है और मैं तुझ में हूँ, वैसे ही वे भी हम में हों। 17:21. यूहन्ना अक्सर कहता है कि यीशु और विश्वासी एक दूसरे में होंगे या एक दूसरे में रहेंगे। यीशु भविष्यवाणी करते हैं और उद्धृत करते हैं कि, उस दिन, तुम जानोगे कि मैं अपने पिता में हूँ, तुम मुझ में हो, और मैं तुम में हूँ।

14:20. यीशु और उसके सच्चे शिष्य परस्पर एक दूसरे में रहेंगे। मेरा मांस सच्चा भोजन है। मेरा खून सच्चा पेय है।

जो मेरा मांस खाता और मेरा लोहू पीता है, वह मुझ में बना रहता है, और मैं उसमें। 6:55-56 तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में। जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो, तो नहीं फल सकते।

मैं दाखलता हूँ, तुम डालियाँ हो। जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें, वह बहुत फल लाता है, क्योंकि मुझसे अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते। पिता के पुत्र के प्रति प्रेम और संसार के प्रति प्रेम के कारण और पुत्र के देहधारण, मृत्यु और पुनरुत्थान के कारण, विश्वासी पिता और पुत्र में होंगे।

यह सुनने में भले ही आश्चर्यजनक लगे, लेकिन विश्वासी अनुग्रह के एक कार्य के रूप में त्रित्ववादी व्यक्तियों में परस्पर निवास करेंगे, जब तक कि प्राणी दिव्य जीवन का हिस्सा बन सकते हैं। डेविड क्रम्प के शब्द स्पष्ट और उद्धृत हैं, जो उद्धार के बारे में जॉन की समझ के हृदय और आत्मा के रूप में ईश्वर के जीवन में परस्पर निवास करते हैं। पिता और पुत्र के बीच दिव्य जीवन और प्रेम के आदान-प्रदान में प्रत्येक विश्वासी का समावेश, अनंत जीवन के बारे में उनके संदेश का सार, हृदय और आत्मा है, उद्धारण समाप्त करें।

यह एक जर्नल लेख है, डेविड क्रम्प, जोहानिन ट्रिनिटी, पेरिकोरेसिस या देवत्व की पुनः जांच कर रहा है, स्कॉटिश जर्नल ऑफ थियोलॉजी, 59, अंक 4, वर्ष 2006, पृष्ठ 410। यह उद्धारण यहाँ से है। जॉन ने परमेश्वर के मिशन में पवित्र आत्मा को शामिल किया है। यीशु पिता से कहेंगे कि वह आत्मा को विश्वासियों के भीतर रहने और उनके साथ रहने के लिए भेजे, और वे उसे जानेंगे।

वे आत्मा को जानेंगे, यूहन्ना 14, 17. हालाँकि यूहन्ना आत्मा के कार्य और मसीह के साथ एकता को पॉल की तरह सहसंबंधित नहीं करता है, यूहन्ना ऐसा करने के लिए व्यवस्थित धर्मशास्त्र के लिए कच्चा माल प्रदान करता है। मैं इस तरह के बिंदु के बारे में दोहराव होने की अपनी प्रतिष्ठा के लिए माफी नहीं माँगता क्योंकि यह दर्शाता है कि मैं अपने व्यवस्थित धर्मशास्त्र को बाइबल पर आधारित करने के लिए कड़ी मेहनत कर रहा हूँ।

कोई माफ़ी नहीं। आवेदन। सवाल पूछा जाना चाहिए।

तो क्या हुआ? इस यूहन्ना धर्मशास्त्र से क्या फर्क पड़ता है? सबसे पहले, विश्वासियों को इन सच्चाइयों और उनके द्वारा व्यक्त की गई वास्तविकताओं पर आश्चर्य और पूजा से भर जाना चाहिए। कौन सा मनुष्य उनके बारे में सोचेगा? कोई भी मनुष्य नहीं। मेरे लिए, यह यूहन्ना के सुसमाचार पर दिव्य उंगलियों के निशान का सबूत है।

यह सब कौन बना सकता है? यहाँ विचार करने और उस परमेश्वर की आराधना करने के लिए बहुत कुछ है जो हमसे इस तरह प्यार करेगा। दूसरा, हमें परमेश्वर के पुत्र को खाना और पीना चाहिए, जो हमारा सच्चा भोजन है, 6:55-57। यानी, मुझे उन आयतों को फिर से दोहराने दें।

वे बहुत अमीर हैं। यूहन्ना 6:55-57. मेरा मांस सच्चा भोजन है, और मेरा खून सच्चा पेय है।

जो मेरा मांस खाता और मेरा लहू पीता है, वह मुझ में बना रहता है, और मैं उसमें। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि उसने यहूदियों को बदनाम किया। जैसे जीवित पिता ने मुझे भेजा और मैं पिता के कारण जीवित हूँ, वैसे ही जो मुझे खाता है, वह भी मेरे कारण जीवित रहेगा।

अर्थात्, हमें परमेश्वर के पुत्र को खाना और पीना चाहिए, जो हमारा सच्चा भोजन है। हमें आध्यात्मिक पोषण के लिए उस पर निर्भर रहना चाहिए, जैसे हम भौतिक जीवन के लिए अपनी दैनिक रोटी पर निर्भर रहते हैं। देहधारी पुत्र हमें अभी अनन्त जीवन देता है और युग के अंत में हमें मृतकों में से उठाकर अनन्त जीवन प्रदान करेगा।

तीसरा, ईश्वरीय व्यक्तियों के सह-अनुपालन के कारण, हमें अदृश्य पिता के बारे में जानने के लिए पुत्र पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, 14:8-11। मसीह के साथ एकता के हमारे अध्ययन को हमें उसके व्यक्तित्व से दूर नहीं बल्कि उसके व्यक्तित्व में और गहराई तक ले जाना चाहिए। हमें कई लाभ मिलते हैं, लेकिन वे केवल मसीह के साथ एकता से ही मिलते हैं। उसे हमारा ध्यान केंद्रित रखना चाहिए।

अगर हम परमेश्वर के चरित्र, वचनों और तरीकों के बारे में जानना चाहते हैं, तो हमें क्राइस्टोलॉजी का अध्ययन करना चाहिए क्योंकि उसने कहा, जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है। मैं पिता में हूँ, और पिता मुझ में है, यूहन्ना 14.9-10। चौथा, हम शाखाएँ हैं जिनके पास दाखलता, परमेश्वर के पुत्र में रहने का विशेषाधिकार और जिम्मेदारी है। इसका मतलब है कि हम उसके प्रेम में रहते हैं, वह प्रेम जो पिता ने उससे प्रेम किया, यूहन्ना 15 :9। हम यीशु के साथ एक व्यक्तिगत संबंध में बने रहते हैं।

क्योंकि हम जानते हैं कि वह हमसे प्रेम करता है, इसलिए हम भी उससे प्रेम करते हैं। हम उससे प्रेम करते हैं जिसने पहले हमसे प्रेम किया। जब हम आज्ञाकारिता में उसके साथ चलते हैं तो हम उसके साथ समृद्ध संगति का आनंद लेते हैं।

प्रार्थनाओं का उत्तर मिलता है और आनंद मिलता है। पाँचवाँ, यीशु की प्रार्थना में पिता और पुत्र के साथ पारस्परिक निवास के बारे में सुनने के बाद, यूहन्ना 17:22-23 में, आपने मुझे जो महिमा दी है, हे पिता, मैंने उन्हें दी है कि वे एक हों, जैसे हम एक हैं, मैं उनमें हूँ और तू मुझ में, कि वे पूर्ण रूप से एक हो जाएँ ताकि संसार जाने कि तूने मुझे भेजा है और जैसा तूने मुझसे प्रेम किया, वैसा ही तू उनसे प्रेम करे। छठा, 17:22-23 में यीशु की प्रार्थना में पिता और पुत्र के उस पारस्परिक निवास के बारे में सुनने के बाद, हमें उस एकता को जीने के लिए प्रेरित होना चाहिए जिसके लिए मसीह प्रार्थना करता है।

हमारे लिए यह शर्मनाक है कि हम सिद्धांत, पूर्वाग्रह या किसी और चीज को दूसरे मसीहियों का स्वागत करने से रोकें, जैसा कि मसीह ने हमारा स्वागत किया। रोमियों 15:7. एक दूसरे को वैसे ही स्वीकार करें जैसे परमेश्वर ने तुम्हें स्वीकार किया है। या यह मसीह है? या तो मेरा उद्धरण गलत है, या मेरा कथन गलत है।

मैं इसके साथ नहीं रह सकता। इसलिए, एक दूसरे का स्वागत करें जैसे मसीह ने आपका स्वागत किया है। ओह, यह और भी बेहतर है।

परमेश्वर की महिमा के लिए। मुझे यह पसंद है। इसके बजाय, हमें सैद्धांतिक रूप से दृढ़ विश्वासी होना चाहिए, जिसमें अन्य विश्वासियों के लिए प्रेम और संगति के बाइबल के सिद्धांतों को जीना शामिल है।

इसका मतलब यह है कि हमें प्रभु यीशु मसीह में किसी भी अन्य सच्चे विश्वासी को संगति का दाहिना हाथ देने में सक्षम होना चाहिए। इसका मतलब यह नहीं है कि हम सभी संप्रदायों की विशिष्टता को हवा में उड़ा दें। इसका मतलब यह नहीं है कि हम एलसीडी, कम से कम आम संप्रदाय ईसाई धर्म का पालन करते हैं, क्योंकि सुसमाचार के अलावा अन्य चीजें महत्वपूर्ण हैं।

लेकिन इसका मतलब है कि सुसमाचार सबसे महत्वपूर्ण है और निश्चित रूप से यह हमारे एक दूसरे को प्राप्त करने और अन्य विश्वासियों के साथ हमारी संगति का आधार है। छठा, हम भी परमेश्वर के मिशन में शामिल हैं। हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि परमेश्वर हमारे जीवन को उन लोगों तक सुसमाचार पहुँचाने में उपयोगी बनाए जिन्हें इसकी ज़रूरत है।

यह चौथे सुसमाचार में मसीह के साथ एकता के हमारे अध्ययन का समापन करता है। और अब हम पौलुस के पत्रों में मसीह के साथ एकता की ओर मुड़ते हैं।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा पवित्र आत्मा और मसीह के साथ एकता पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 11 है, मसीह के साथ एकता के लिए आधार, यूहन्ना 17।